

भगवान नैमिनाथ

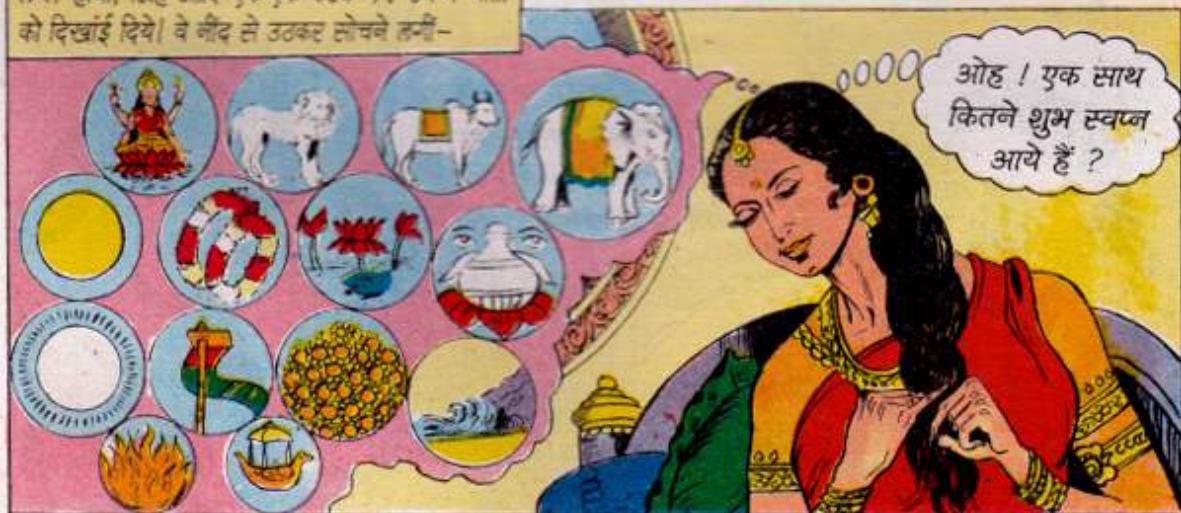
जन्मे दो राजाओं का दाव्य था। सोरियपुर के उत्तर-पूर्व के शालक समुद्रविलय थे जिनकी पटलानी का नाम था शिवादेवी। दक्षिणी-पूर्व भाग पर राजा वसुदेव जी का दाव्य था। इनकी दो राजियाँ थीं दोहिणी और देवकी। वसुदेव जी की बड़ी राजी दोहिणी के पुत्र थे बलदाम। छोटी राजी देवकी के पुत्र थे श्रीकृष्ण।

यह कहानी श्रीकृष्ण के चचेरे भाई भगवान नैमिनाथ के जीवन-कृत पर आधारित है जिन्होंने महान् पुण्य कर्म कर बीस स्थानों की उपासना करके पिछले जन्म में तीर्थकर मोत्र कर्म का दाव्य किया और स्वर्ग में अपराजित विमान में देव बने।

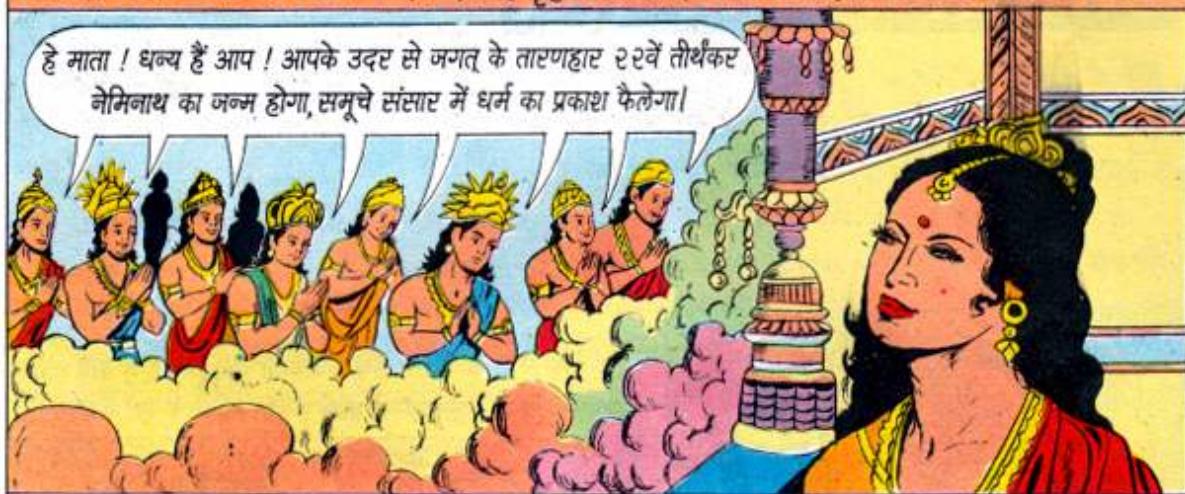


माता शिवादेवी महलों में सोयी हुई थीं। कार्तिक मास की कृष्ण त्रयोदशी की मध्यरात्रि में स्वर्ग से प्रवाण कर देव की अव्य आत्मा नाता शिवादेवी के गर्भ में अवतारित हुई। एक साथ अबेक दिव्य स्वर्ण उनकी आँखों में तैरने लगे। हाथी, सिंह आदि एक-एक करके १४ स्वर्ण माता को दिखाई दिये। वे लीद से उठकर सोचते लगीं—

युक्त दिव्य स्वर्ण के सबसे ऊँचे अपराजित देव विमान में इस महान् पुण्यान् देव का आत्म तेजते हमा। उन्होंने श्रीविष्णु के गर्भ में देखा—



आकाश-मंडल में स्थित स्वर्ग के देव-देवेन्द्र-बृहस्पति आदि माता शिवादेवी को नमस्कार करने लगे।



रानी उठी और पास के कक्ष में सोये महाराज समुद्रविजय के पास आई। रानी के आने की आहट से महाराज की नींद उचट गई। महाराज ने पूछा—



रानी शिवादेवी ने महाराज को अपने स्वर्ण सुनाते हुए कहा—



समुद्रविजय बोले—



महाराज की बात सुनकर प्रसन्न रानी अपने कक्ष में वापस आ गई और बाकी रात यमोकार मंत्र का जाप करती रही।

गर्भ के नौ मास पूटे होने पर श्रावण सुषि पंचमी के दिन दानी शिवादेवी ने एक सूर्य जैसे प्रकाशपुंज रूपी बालप्रभु को जन्म दिया। दानभवन का कौना-कौना उस प्रकाश से जगमगा उठा। स्वर्ग से ६४ इन्द्र और हजारों देव-देवियाँ माता शिवादेवी की वन्दना करने आये।



देवेन्द्र ने बालक का एक अन्य प्रतिष्ठित बनाकर माता के पास सुला दिया।



और बाल-प्रभु को अपने हाथों में उठाकर मेलपर्वत के शिखर पर ले आये। अपने पाँच दिव्य सूर्य बना कर देवेन्द्र ने भगवान का जन्म अभिषेक किया।



बाहरवै दिन महाराज समुद्रविजय ने एक विशाल प्रीतिभोज का आयोजन किया और घोषणा की—



एक आचार्य का कहना है, बालक का नाम इन्द्र ने 'नेमिकुमार' रखा, वे आर्यों-शकुओं को भी आरे इष्ट लगते थे इसलिए उनका नाम आरे-इष्ट अस्ति प्रसिद्ध हो गया।